पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 25-29

जुम्सी सिराम : जीवन और साहित्य

✍ श्रीमती मोर्जुम लोयी

जीवन परिचय :

अरुणाचल प्रदेश की पश्चिमी सियाङ ज़िले के तादिन ग्राम में सन् 1963 के 23 मार्च को जन्मे श्री जुम्सी सिराम जी एक महान साहित्यकार हैं। बचपन में ही वे अनाथ हो गये थे। अत्यंत परिश्रमी श्री जुम्सी जी की प्राथमिक शिक्षा तादिन के गवर्नमेंट स्कूल में, फिर कोम्बो मिडिल स्कूल और फिर गवर्नमेंट हाईस्कूल आलो, पश्चिमी सियाङ ज़िला, अरुणाचल प्रदेश में हुई। वे अपने माता-पिता की अकेली संतान हैं। जुम्सी सिराम ने नवीं कक्षा तक ही शिक्षा ग्रहण की, इसके आगे वे पढ़ न सके। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती बाबी लोलेन सिराम हैं तथा उनसे उन्हें दो बेटे- हिली पॉल सिराम और हियि ज़ोजेफ सिराम तथा तीन बेटियाँ- हीयिर सिराम, हीरिक सिराम तथा शिला सिराम हुईं।

लेखन के प्रति रुचि :

चर्चित लेखक डॉ. रमण शाण्डियाल जी, जो कि बिहार से बतौर अध्यापक अरुणाचल प्रदेश आए थे, के सम्पर्क में तीन महीने रहने के बाद उनकी प्रेरणा से सिरामजी ने लिखना-पढ़ना आरम्भ किया था, इसी क्रम में हिंदी साहित्य के प्रति उनकी रुचि जगी।

रचनाएँ:

इन्होंने अनेक रचनाएँ की। उनमें प्रमुख हैं- 'आयी-आलुक' (एक प्रेम कथा;1992), 'शिला का रहस्य' (2001), 'मेरी आवाज़ सुनो' (2003), 'जायी बोने' (2003), 'गालो लोकजीवन एवं संस्कृति' (2007), 'स्वतंत्रता सेनानी श्री मात्मुर जामोह' (2012) आदि।

'आयी-आलुक' एक उपन्यास के रूप में सन् 1992 में प्रकाशित होकर आया। यह एक प्रेम कथा है। अपने प्रकाशन के समय कई अखबारों में इस पुस्तक की चर्चा हुई थी। यह पटना से प्रकाशित होने वाले अखबार 'उत्तर बिहार' और 'कोशा', ईटानगर के 'अरुण आवाज़', रांची के 'आदिवासी', बम्बई के 'माधुरी', गुवाहाटी, असम के 'पूर्वांचल

प्रहरी', अरुणाचल प्रदेश के आलो के 'योमगो कॉलिंग' (Yomgo Calling) आदि अखबारों की सुर्खियां बही थी।

सन् 2001 के सितम्बर महीने में उनकी दूसरी पुस्तक 'शिला का रहस्य' प्रकाशित हुई, जो कि भारत और चीन की सीमा पर केन्द्रित है। ये गालो लोककथा तोपगोन पर आधारित है। कैसे प्राचीनकाल में एक वधु रास्ते में किसी शिला पर विश्राम करते हुए शिला के आगोश में समा जाती है,उसकी रोचक कथा ' शीला के रहस्य' में प्रकाशित है। इस पुस्तक के लिए उन्हें ईटानगर के अरुण नागरी संस्थान द्वारा 'हिंदी साहित्य अवार्ड' से नवाज़ा गया था। यह साहित्य के क्षेत्र में उनका पहला पुरस्कार है।

उनकी तीसरी किताब है- 'मेरी आवाज़ सुनो', जो सन् 2003 में प्रकाशित होकर आयी थी। यह प्रेम कथा पर आधारित उपन्यास है। सन् 2003 के सितम्बर महीने में हिंदी दिवस के अवसर पर 'अरुणाचल हिंदी समिति' द्वारा इन्हें 'तादार ताङ राष्ट्रीय भाषा अवार्ड' से नवाज़ा गया और जुम्सी सिराम को अरुणाचल प्रदेश का प्रथम हिंदी रचनाकार घोषित किया गया।

उनकी चौथी पुस्तक 'जायी बोने' सन् 2003 में प्रकाशित हुई। जायी बोने गालो लोककथा पर आधारित उपन्यास है। जुम्सी जी का यह उपन्यास अत्यंत मार्मिक है और इस रचना से संदेश दिये गये हैं। जायी बोने कथा-नायिका का नाम है, जिसकी खूबसूरती की चर्चा चहुँ ओर फैली हुई थी। यह कथा प्रेम, बेवफाई और प्रतिशोध से भरी एक नाटिका भी है। माना जाता है कि जायी बोने धरती की बेटी है, जो इतनी सुन्दर थी कि हाथ लगते ही मैली हो जाए। देखने वाले यही कहते कि यह सचमुच रूप और लावण्य की देवी है। सूर्य में उष्णता और चांद में दाग है, त्रिभुवन में उसकी उपमा के लिए कुछ भी नहीं है। जब वह युवा हुई तो उसके लिए रिश्ते आने लगे। कहा जाता है कि जलदेवता बिरतापु ने भी उनके रूप सौन्दर्य का वर्णन सुना और जल से स्थल में आकर उन्होंने जायी बोने को देखा तो वे भी उसकी खूबसूरती से मोहित हो गये तथा पहली नज़र में ही उससे प्रेम कर बैठे। उन्होंने जायी बोने के माता-पिता के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। उसी प्रकार वर्षा के राजकुमार दीदुकूब भी जायी बोने का हाथ मांगने धरती पर उतर आये। जायी बोने भी उनसे प्यार करने लगी थी। शुरू में यौवन की दहलीज़ पर कदम रखते ही उसके लिए विवाह के कई प्रस्ताव आ रहे थे और जायी बोने निर्णय नहीं कर पा रही थी।

जायी बोने के माता-पिता को उनकी बेटी के लिए वर चुनना मुश्किल हो रहा था। वे अपने कलेजे के टुकड़े को किसी ऐसे-वैसे के हाथों सौंप भी नहीं सकते थे। बिरतापु और दिदुकूब में स्पर्धा थी। बिरतापु जायी बोने और उसके माता-पिता के लिए जलीय जीवों का मांस विशेषकर स्वादिष्ट मछलियाँ लेकर आते थे और दीदुकूब जंगली जानवरों की मांसादि लाते थे। कई महीनों तक माता-पिता भी निश्चय नहीं कर पाये। अंतत: फैसला बिरतापु के हक में सुनाया गया। क्योंकि दीदुकूब द्वारा लाया गया मांस दांतों में फंसकर दर्द हुआ था और बिरतापु की मछलियां स्वादिष्ट तो थी ही, दांतों में भी नहीं फँसती थीं।

जायी बोने बिरतापु के साथ ब्याहकर चली गई और इस बात से अंजान दीदुकूब बाँस से निर्मित बड़ी टोकरी, जिसे गालो लोग 'पापे' कहते हैं, में विभिन्न प्रकार के जंगली जानवरों का स्वादिष्ट मांस लेकर पहुँचे। वहां उन्हें जब पता चला कि जायी बोने बिरतापु के साथ ब्याहकर चली गई तो वह क्रोधित हुआ। इससे बिजली कौंधने लगी। नदी में बज्रपात कराया पर कुछ असर नहीं हुआ। उसने प्रण लिया कि वह इसका बदला लेकर रहेगा। एक दिन जंगल के रास्ते में उन्हें नेवला प्रजाति का जानवर मिला, जिसे गालो में 'होयिन' कहते हैं। उसकी हालत बहुत कमजोर थी। पूछने पर उसने एक विषैले पेड़ के फलों के बारे में बताया, जिन्हें खाने से उसकी यह हालत हो गई थी। दीदुकूब ने उससे उस फल या पेड़ को दिखाने के लिए कहा और कहा कि इसके बदले उसे ऐसे स्थान का पता बतायेंगे, जहाँ खूब सारे मीठे फल, फूल और अन्य खाद्य पदार्थ उपलब्ध हैं। होयिन ने उसका प्रस्ताव मंजूर किया और वे विशेष पेड़ को दिखा दिया। यह ओञोर का पेड़ था। ओञोर के कोपले अति स्वादिष्ट होते हैं और उसके प्रौढ़ फल और पत्ते जहरीले होते हैं। ओञोर के कोपले आज भी अरुणाचल में खाये जाते हैं, जबकि उसके फल और पत्तों से लोग दूर रहते हैं।

उधर जायी बोने अपनी वैवाहिक जीवन में बहुत खुश थी। उसे प्यार करने वाला पति जो मिला था। इस बात से अंजान कि वहाँ दीदुकूब उससे बदला लेने के लिए व्याकुल है। एक दिन वह पति के साथ नदी में जलक्रीड़ा में मग्न थी।उसी दौरान दीदूकूब ने ताम (जहरीली ओञोर के फल) पीसकर नदी में बहा दिया। जिसके कारण दोनों तड़प-तड़पकर मर गये।

2007 में प्रकाशित 'गालो लोकजीवन एवं संस्कृति' शीर्षक पुस्तक में लेखक ने गालो समाज, संस्कृति, ईसाई धर्म की श्रीवृद्धि, गालो

लोकसाहित्य आदि विषयों को बहुत ही खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत किया है। सिराम जी ने गालो मुहावरों और लोकोक्तियों को भी इस पुस्तक में उनके हिंदी अर्थ के साथ विस्तारपूर्वक बताया है। इसी तरह सन् 2012 के दिसम्बर महीने में उनका 'मात्मुर जामोह' प्रकाशित हुआ, जो सन् 1911-12 की एंग्लो-आबोर वॉर (Anglo Abor War) पर केन्द्रित है। यह रचना ऐतिहासिक सत्या कथा पर आधारित है। मात्मुर जामोह जी आदि-जनजाति के एक महान क्रांतिकारी थे, जिन्होंने तत्कालीन असिस्टेंट पॉलिटिकल ऑफिसर नोएल विल्यमसन की हत्या की।

जिस समय जुम्सी जी ने लिखना आरम्भ किया तब कोई अन्य अरुणाचली हिंदी में नहीं लिख रहे थे, यह एक बहुत बड़ी बात है। एक बात और, जुम्सी जी की भाषा अत्यंत सरल और सहज होती है कि उसे कोई पाठक आसानी से पढ़कर समझ भी लेता है। एक दौर में लिपि के अभाव में अरुणाचली लोककथाओं के लुप्त होने का भय था, उन्होंने देवनागरी में अरुणाचली लोकगाथाओं को लिखकर अरुणाचली संस्कृति को संरक्षित करने का कार्य किया, इसके लिए समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। अरुणाचल प्रदेश के हिंदी साहित्य के प्रतिनिधि साहित्यकार श्री जुम्सी सिराम जी ने अपने साहित्य के प्रति प्रेम और निष्ठा से यह साबित किया है कि साहित्य रचने के लिए बहुत ज़्यादा डिग्रियों की आवशयकता नहीं है, जरूरत है तो सच्ची लगन, भाषा व साहित्य के प्रति अनुराग की।

सन्दर्भ ग्रंथ :

सिराम, जुम्सी. आयी-आलुक, 1992
सिराम, जुम्सी.गालो लोकजीवन एवं संस्कृत, 2007
सिराम, जुम्सी. जायी बोने, 2003
सिराम, जुम्सी. मेरी आवाज़ सुनो.प्रथम.दिल्ली: अनुज्ञा प्रकाशन,2003
सिराम, जुम्सी. शिला का रहस्य, 2001
सिराम, जुम्सी.मात्मुर जामोह.दूसरा.आलो:श्री केंबोन बाग्रा(प्रकाशक),2012

संपर्क-सूत्र:
सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग
बिनी याङा शासकीय महिला महाविद्यालय, लेखी
अरुणाचल प्रदेश
ई-मेल : morjum2010@gmail.com

पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका